शुष्क वन अनुसंधान संस्थान, जोधपुर द्वारा पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय, भारत सरकार की वानिकी प्रशिक्षण एवं क्षमता वर्धन (Forestry Training and capacity Building) की अम्ब्रेला स्कीम (Umbrella Scheme) के तहत आयोजित प्रशिक्षण कार्यक्रमों का विवरण :

पर्यावरण, वन एंव जलवायु परिवर्तन मंत्रालय भारत सरकार की "वानिकी प्रशिक्षण एवं क्षमता वर्धन" (Forestry Training and capacity Building) की अम्ब्रेला स्कीम (Umbrella Scheme) के तहत शुष्क वन अनुसंधान संस्थान जोधपुर द्वारा तीन प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किये गये, जिनका विवरण निम्न प्रकार है:-

(1) अन्य पणधारियों के लिए "शुष्क क्षेत्र वानिकी एवं वानिकी में नवीन तकनीक" विषय पर तीन दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम दिनांक 29-31 अगस्त 2017

दिनांक 29-31 अगस्त 2017 तक अन्य पणधारियों के लिए "शुष्क क्षेत्र वानिकी एवं वानिकी में नवीन तकनीक" विषय पर तीन दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया, जिसमें जोधपुर जिले की पंचायत राज संस्थाओं के प्रतिनिधि (सरपंच एवं वार्ड पंच), पाली एवं सिरोही जिलों के वन सुरक्षा एवं प्रबंध समिति के अध्यक्ष एवं सदस्य, स्वयं सेवी संस्था के प्रतिनिधि, जलग्रहण क्षेत्र विकास दल के सदस्य, शिक्षकगण, जय नारायण व्यास विश्वविद्यालय के शोधार्थी, जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय के स्काउट ग्रुप के रोवर्, यूनियन बैंक ऑफ इंडिया के सहायक प्रबंधक, प्रगतिशील किसान सहित कुल 38 प्रशिक्षणार्थियों ने प्रशिक्षण में भाग लिया ।

प्रशिक्षण के प्रथम दिवस उदघाटन सत्र में संस्थान के निदेशक श्री एन.के.वासु भा.व.से. ने प्रशिक्षणार्थियों को संबोधित किया तथा श्री उमाराम चौधरी भा.व.से., प्रभागाध्यक्ष, कृषि वानिकी एवं विस्तार ने प्रशिक्षण कार्यक्रम की विषय-वस्तु की जानकारी दी।

प्रशिक्षण कार्यक्रम के प्रथम दिवस तकनीकी सत्र में श्री उमाराम चौधरी, भा.व.से. ने "वनों का महत्व तथा वृक्षों से प्रत्यक्ष व परोक्ष लाभों" की जानकारी संभाषण द्वारा प्रदान की। डॉ. डी.के. मिश्रा वैज्ञानिक -एफ ने "पौधशाला स्थापना एवं प्रबंधन विषय" पर विस्तृत जानकारी देते हुए पौधशाला से संबंधित विभिन्न तकनीकी पहलुओं की जानकारी दी। डॉ जी.सिंह वैज्ञानिक -जी ने "शुष्क क्षेत्रों में पौधारोपण एवं वनीकरण तकनीक" पर अपने सभांषण में विभिन्न क्षेत्रों के प्रजाति चयन से लगाकर पौधारोपण एवं वनीकरण के संबंध में तकनीकी जानकारी दी। डॉ संगीता सिंह वैज्ञानिक -ई ने "वानिकी में जैविक खाद का उपयोग" विषय पर अपने संभाषण में वानिकी में जैविक खाद के

उपयोग के बारे में जानकारी दी। डॉ रंजना आर्या ने "अवक्रमित भूमि की उत्पादकता वृद्धि" विषय पर संभाषण देते हुए अवक्रमित भूमि की उत्पादकता वृद्धि के लिए तकनीकों की जानकारी दी। डॉ. सरिता आर्या वैज्ञानिक -एफ ने “गुणवत्ता युक्त पौधरोपण सामग्री का उत्पादन” विषय पर संभाषण में गुणवत्ता युक्त पौध सामग्री तैयार करने की जानकारी दी।

प्रशिक्षण कार्यक्रम के दूसरे दिन क्षेत्र भ्रमण (Field visit) का कार्यक्रम रखा गया जिसके प्रारम्भ में शुष्क वन अनुसंधान संस्थान (आफरी) की प्रायोगिक एवं उच्च तकनीक पौधशाला का भ्रमण करवाया गया। जहां पर प्रशिक्षणार्थियों को श्री शैलेन्द्र सिंह, तकनीकी सहायक द्वारा पौधशाला की विभिन्न तकनीकी प्रक्रियाओं से संबंधित जानकारी दी गयी । पौधशाला भ्रमण के दौरान प्रशिक्षणार्थियों ने पौधशाला की विभिन्न तकनीकों की जानकारी लेते हुए औषधीय उद्यान का भी अवलोकन किया। श्री उमाराम चौधरी, भा.व.से. ने भ्रमण के दौरान विभिन्न जानकारी प्रशिक्षणार्थियों को करवायी। प्रशिक्षणार्थियों ने शुष्क वन अनुसंधान संस्थान के प्रायोगिक क्षेत्र, गंगाणी का भ्रमण किया जहां पर श्री रतना राम लोहरा एवं श्री भारत वीर जयंत ने नमक प्रभावित क्षेत्रों में किये गये विभिन्न प्रायोगिक परीक्षणों एवं तकनीकों की जानकारी दी। इसके बाद प्रशिक्षणार्थियों ने वन विभाग, राजस्थान की पौधशाला औसियां एवं विभागीय वृक्षारोपण,वृक्षकुंज भीकमकोर का अवलोकन किया। यहां पर विभाग के श्री प्रकाश कुमार जीनगर, वनपाल एंव श्री रणजीत सिंह , वन रक्षक ने प्रशिक्षणार्थियों को विभिन्न जानकारी दी। इस क्षेत्र भ्रमण में प्रशिक्षणार्थियों को वानिकी से संबंधित विभिन्न जानकरी दी गई ।

प्रशिक्षण के तीसरे एवं अंतिम दिन डॉ. जी. सिंह ने "शुष्क क्षेत्र में मृदा एवं जल प्रबंधन" विषय पर संभाषण देते हुए जल एवं मृदा प्रबंधन से संबंधित विभिन्न जानकारी दी। श्री एन. बाला वैज्ञानिक - एफ ने “वानिकी एवं जलवायु परिवर्तन“ से संबंधित संभाषण में वानिकी एवं जलवायु परिवर्तन संबंधी वैज्ञानिक एवं तकनीकी पहलुओं की चर्चा की ।

DEGRADED HILLS

Forestry options to mitigate
Climate change

डॉ. माला राठौड़, वैज्ञानिक- डी ने "शुष्क क्षेत्र की महत्त्वपूर्ण अकाष्ठ वनोपज एवं मूल्य संवर्धन " विषय पर संभाषण देते हुए विभिन्न अकाष्ठ वनोपाज़ एवं उनके मूल्य संवर्धन संबंधी जानकारी दी। डॉ. बिलास सिंह वैज्ञानिक -बी ने "कृषि वानिकी" पर संभाषण देते हुए कृषि वानिकी के अंतर्गत वृक्षों के संवर्धन की चर्चा की। श्री सादुल राम देवड़ा , अनुसंधान सहायक द्वितीय ने "औषधीय पादप एवं उनका संवर्धन" विषय पर संभाषण देते हुए औषधीय पौधों और उनके संवर्धन के बारे में बताया ।

इसके बाद विचार विमर्श एवं फीडबेक सत्र हुआ ।

समापन सत्र में संस्थान के निदेशक श्री एन. के. वासु , भा.व.से. ने प्रशिक्षणार्थियों को संबोधित किया।

सभी प्रशिक्षणार्थियों को प्रमाण पत्र भी वितरित किए गए । श्रीमती भावना शर्मा , वैज्ञानिक- डी कोर्स डायरेक्टर ने सभी का धन्यवाद किया ।

प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन/व्यवस्था कोर्स डायरेक्टर श्रीमती भावना शर्मा वैज्ञानिक -डी , श्री रतना राम लोहरा , अनुसंधान सहायक प्रथम , महिपाल विश्नोई , अनुसंधान सहायक द्वितीय , डॉ. हेमलता, सहायक, श्रीमती मीता सिंह तोमर, तकनीकी सहायक, श्री तेजाराम द्वारा की गयी।

2. <u>अन्य सेवाओं के कार्मिकों के लिए "शुष्क क्षेत्र वानिकी : संवर्धन , विकास एवं संरक्षण" विषय पर प्रशिक्षण कार्यक्रम (दिनांक 12-14 सितंबर, 2017)</u>

दिनांक 12-14 सितंबर, 2017 तक अन्य सेवाओं के कार्मिकों के लिए "शुष्क क्षेत्र वानिकी : संवर्धन , विकास एवं संरक्षण" विषय पर प्रशिक्षण कार्यक्रम (Training Programme on "Dry Land Forestry: Propagation, Development and Conservation" आयोजित किया गया जिसमें जिला परिषद, पर्यटन विभाग , सार्वजनिक निर्माण विभाग , जन स्वास्थ्य अभियांत्रिकी विभाग , जोधपुर विकास प्राधिकरण, जल संसाधन विभाग , भूजल विभाग , पशुपालन विभाग , कृषि विभाग , उद्यान विभाग, जोधपुर विद्युत वितरण निगम , जलग्रहण क्षेत्र विकास एवं भू संरक्षण विभाग के 33 प्रतिभागियों ने भाग लिया।

प्रशिक्षण कार्यक्रम के प्रथम दिवस उदघाटन सत्र में निदेशक डॉ. इंद्रदेव आर्य ने प्रशिक्षणार्थियों को संबोधित किया। श्री उमाराम चौधरी , भा.व.से., प्रभागाध्यक्ष, कृषि वानिकी एवं विस्तार ने प्रशिक्षण कार्यक्रम की विषय-वस्तु की जानकारी दी।

तकनीकी सत्र में श्री उमाराम चौधरी ने "वनों की महत्ता तथा उनसे प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष लाभ" के बारे में संभाषण देते हुए वर्तमान पर्यावरणीय संदर्भ में वनों की महत्ता की चर्चा की तथा इनसे होने वाले प्रत्यक्ष एवं परोक्ष लाभों की जानकारी दी। डॉ . डी. के. मिश्रा ने "नर्सरी की स्थापना एवं पौध प्रबंधन" विषय पर अपने संभाषण में पौधशाला एवं पौध प्रबंधन से संबंधी विभिन्न प्रक्रियाओं एवं उनके वैज्ञानिक तथा तकनीकी पहलुओं की जानकारी प्रशिक्षणार्थियों को करवायी। डॉ. जी. सिंह ने "शुष्क क्षेत्रों में पौधारोपण तथा जल एवं मृदा संरक्षण" विषय से संबंधित अपने संभाषण में पौधारोपण से संबन्धित विभिन्न जानकारियों तथा जल एवं मृदा संरक्षण करने की वैज्ञानिक एवं तकनीकी जानकारी दी। डॉ. सरिता आर्य ने "सूक्ष्म एवं दीर्घ संवर्धन तकनीक द्वारा पादपों का संवर्धन एवं संरक्षण" विषय पर अपने संभाषण में संवर्धन एवं संरक्षण से संबंधित विभिन्न तकनीकों की वैज्ञानिक जानकारी उपलब्ध करवायी। डॉ. रंजना आर्य ने "लवणीय भूमि की उत्पादकता वृद्धि एवं चारागाह विकास" विषय पर अपने संभाषण में नमक प्रभावित क्षेत्रों में पौधरोपण तकनीकों से उत्पादकता बढ़ाना एवं चारागाह विकास से संबंधित वैज्ञानिक एवं तकनीकी पहलुओं की जानकारी दी।

केन्द्रीय रुक्ष क्षेत्र अनुसंधान संस्थान , (Central Arid Zone Research Institute, (CAZRI)), जोधपुर के प्रधान वैज्ञानिक (Principal Scientist) डॉ. पी. आर. मेघवाल ने "शुष्क क्षेत्र में बागवानी" विषय से संबंधित अपने संभाषण में शुष्क क्षेत्रों से संबंधी फलदार पौधों की बागवानी के संबंध में जानकारी दी।

प्रशिक्षण कार्यक्रम के दूसरे दिन क्षेत्र भ्रमण का कार्यक्रम रखा गया , जिसकी शुरुआत स्वयं सेवी संस्था मेहरानगढ़ पहाड़ी पर्यावरण विकास समिति द्वारा विकसित औषधीय उद्यान से हुई जहां संस्था के अध्यक्ष श्री प्रसन्न पुरी गोस्वामी ने प्रशिक्षणार्थियों को औषधीय उद्यान में विकसित विभिन्न प्रकार के वृक्ष एवं अन्य औषधीय पौधों के बारे में जानकारी तथा उद्यान विकसित करने हेतु मृदा एवं जल संरक्षण कार्यों की भी जानकारी दी । इसके बाद प्रशिक्षणार्थियों को माचिया जैव उद्यान का भ्रमण कराया गया । वहाँ श्री भगवान सिंह राठौड़ , उप वन संरक्षक ने नव विकसित उद्यान के बारे में विस्तृत जानकारी दी । प्रशिक्षणार्थियों को प्रकृति निर्वचन केंद्र (Nature Interpretation Center) सहित उद्यान का भ्रमण करवाया गया । इसके बाद प्रशिक्षणार्थियों ने शुष्क वन अनुसंधान संस्थान, जोधपुर के प्रायोगिक क्षेत्र, गंगाणी का भ्रमण कर नमक प्रभावित क्षेत्रों के पुनर्वासन संबंधित प्रयोगों एवं तकनीकों की जानकारी ली ।

तत्पश्चात प्रशिक्षणार्थियों ने संस्थान की उच्च तकनीक एवं प्रायोगिक पौधशाला का भ्रमण किया , जहाँ श्री सादुल राम देवड़ा , अनुसंधान सहायक द्वितीय ने पौधशाला की विभिन्न प्रक्रियाओं तथा पौधशाला स्थित औषधीय उद्यान के बारे में जानकारी दी। श्री उमाराम चौधरी भा.व.से. ने भी पौधशाला भ्रमण एवं औषधीय उद्यान भ्रमण के दौरान विभिन्न जानकारियां प्रशिक्षणार्थियों को दी ।

तीसरे दिन तकनीकी सत्र में डॉ. माला राठौड़ ने "शुष्क क्षेत्रों की महत्वपूर्ण अकाष्ठ वनोपज एवं उनका संरक्षण" विषय पर अपने संभाषण में विभिन्न प्रकार के उपयोगी अकाष्ठ वनोपज और उनके

मूल्य संवर्धन से संबन्धित जानकारी दी। श्री एन. बाला, वैज्ञानिक-एफ़ ने "जलवायु परिवर्तन के संदर्भ में वन संरक्षण का महत्व" पर अपने संभाषण में जलवायु परिवर्तन तथा वनों के संरक्षण की महत्ता बतायी । डॉ. बिलास सिंह , वैज्ञानिक -बी ने "कृषि वानिकी के विविध लाभ" से संबंधित अपने संभाषण में खेती के साथ-साथ पेड़ो को पनपाने और उनसे होने वाली आमदनी जैसे प्रत्यक्ष तथा अप्रत्यक्ष लाभों की जानकारी दे। डॉ. नवीन बोहरा , वैज्ञानिक-बी ने "औषधीय पौधों की जीविकोपार्जन में भूमिका एवं उनका संवर्धन " विषय पर अपने संभाषण में औषधीय पौधो के संदर्भ में विभिन्न जानकारी दी। अतिरिक्त प्रधान मुख्य वन संरक्षक , जोधपुर श्री आर. एस. शेखावत भा.व.से . ने "मरुस्थलीय वनस्पति एवं उनका संरक्षण" विषय पर अपने संभाषण में मरुस्थल क्षेत्र की विभिन्न वानस्पतिक प्रजातियों से संबंधित जानकारी दी।

तकनीकी सत्र के बाद विचार-विमर्श एवं फीडबेक सत्र हुआ।

समापन सत्र के मुख्य अतिथि श्री आर. एस. शेखावत , अतिरिक्त प्रधान मुख्य वन संरक्षक, जोधपुर ने प्रशिक्षणार्थियों का आहवान किया कि ज्ञान को फैलाने, आगे ले जाने की भूमिका निभाएँ, प्रचारक बन जाएँ।

निदेशक डॉ. आई.डी. आर्य ने सभी प्रशिक्षणार्थियों को संबोधित किया ।

श्रीमती भावना शर्मा, वैज्ञानिक -डी कोर्स डायरेक्टर ने सभी का धन्यवाद किया । प्रशिक्षणार्थियों को प्रमाण पत्र वितरित किए गए ।

प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन/व्यवस्था कोर्स डायरेक्टर श्रीमती भावना शर्मा वैज्ञानिक -डी श्री रतना राम लोहरा, अनुसंधान सहायक प्रथम , महिपाल विश्नोई, अनुसंधान सहायक द्वितीय , डॉ. हेमलता, सहायक, श्रीमती मीता सिंह तोमर, तकनीकी सहायक, श्री तेजाराम, द्वारा की गयी।

3. <u>अन्य पणधारियों के लिए "सतत आजीविका में वानिकी की भूमिका" विषय पर प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन ,दिनांक 19-21 सितम्बर 2017</u>

दिनांक 19 से 21 सितम्बर, 2017 तक अन्य पणधारियों के लिए सतत "आजीविका में वानिकी की भूमिका" विषय पर तीन दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन शुष्क वन अनुसंधान संस्थान , द्वारा किया गया जिसमें जोधपुर जिले के पंचायती राज संस्थाओं के प्रतिनिधि , जिला परिषद सदस्य, सरपंच एवं उपसरपंच, जोधपुर, जालोर एवं जैसलमेर जिले की वन सुरक्षा एवं प्रबंध समिति के अध्यक्ष एवं सदस्य ,स्वयं सेवी संस्था के प्रतिनिधि, जलग्रहण विकास इकाई अध्यक्ष एवं सदस्य, शिक्षकगण, जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय के शौधार्थी ,राजस्थान आयुर्वेद विश्वविद्यालय के शोधार्थी, जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय के स्काउट के रोवर , प्रगतिशील किसान सहित कुल 37 प्रतिभागियों ने भाग लिया।

प्रशिक्षण कार्यक्रम के उदघाटन सत्र में निदेशक डॉ. इंद्रदेव आर्य ने प्रशिक्षणार्थियों को संबोधित किया। श्री उमाराम चौधरी , भा.व.से., प्रभागाध्यक्ष, कृषि वानिकी एवं विस्तार ने प्रशिक्षण कार्यक्रम एवं इसके विषय-वस्तु की जानकारी दी।

तकनीकी सत्र में श्री उमाराम चौधरी ने "वनों का महत्व तथा वृक्षों से प्रत्यक्ष एवं परोक्ष लाभ" विषय पर अपने संभाषण में वर्तमान पर्यावरणीय मुद्दों के संदर्भ में वनों की भूमिका बतायी तथा वृक्षों से होने वाले प्रत्यक्ष एवं परोक्ष लाभों की जानकारी दी। डॉ. डी. के. मिश्रा, वैज्ञानिक -एफ़ ने पौधशाला

की स्थापना एवं पौध प्रबंधन" विषय पर अपने संभाषण में नर्सरी स्थापना करने एवं पौध उत्पादन , उनके प्रबंधन संबंधी विभिन्न तकनीकी एवं वैज्ञानिक पहलुओं की जानकारी दी । डॉ. जी. सिंह , वैज्ञानिक -जी ने "जल एवं मृदा संरक्षण तथा वनीकरण तकनीक " विषय पर अपने संभाषण में जल तथा मृदा संरक्षण करने और पौध लगाने से संबंधी विभिन्न तकनीकी जानकारियां प्रशिक्षणार्थियों को उपलब्ध करायी । डॉ. सरिता आर्य , वैज्ञानिक -एफ़ ने "गुणवत्तायुक्त पौधरोपण सामग्री के उत्पादन में सूक्ष्म एवं वृहत संवर्धन तकनीक का उपयोग" विषय पर अपने संभाषण में पौधरोपण हेतु अच्छी गुणवत्ता के पौधे कैसे तैयार कर सकते हैं , इसकी जानकारी दी। श्रीमती संगीता त्रिपाठी , वैज्ञानिक "बी" ने "अकाष्ठ वनोपज एवं उनका मूल्य संवर्धन" विषय पर अपने संभाषण में विभिन्न प्रकार के उपयोगी अकाष्ठ वनोपज एवं उनके मूल्य संवर्धन के बारे में जानकारी दी। डॉ. पी. आर. मेघवाल , प्रधान वैज्ञानिक, केन्द्रीय रुक्ष क्षेत्र अनुसंधान संस्थान, (Central Arid Zone Research Institute, (CAZRI)), ने "सतत आजीविका में फलदार वृक्षों की भूमिका" विषय पर अपने संभाषण में विभिन्न फलदार वृक्षों एवं उनकी आजीविका में भूमिका के बारे में जानकारी दी।

प्रशिक्षण कार्यक्रम के दूसरे दिन क्षेत्र भ्रमण (field visit) का कार्यक्रम रखा गया , जिसकी शुरुआत संस्थान की नर्सरी भ्रमण से हुई यहाँ श्री सादुल राम देवड़ा , अनुसंधान सहायक द्वितीय ने विभिन्न जानकारी प्रशिक्षणार्थियों को करवाई । श्री उमाराम चौधरी भा.व.से. ने भी भ्रमण के दौरान विभिन्न जानकारी दी । प्रशिक्षणार्थियों ने नर्सरी एवं नर्सरी परिसर में स्थित औषधी उद्यान का भी अवलोकन किया। इसके बाद प्रशिक्षणार्थियों ने माचिया जैव उद्यान का भ्रमण किया। वहाँ श्री भगवान सिंह राठौड़, उप वन संरक्षक ने नव विकसित उद्यान के संबंध में विस्तृत जानकारी दी । प्रशिक्षणार्थियों ने उद्यान का भ्रमण कर विभिन्न वन्यजीव एवं वानस्पतिक प्रजातियों की जानकारी ली । प्रशिक्षणार्थियों ने प्रकृति निर्वचन केंद् (Nature Interpretation Center) का भी अवलोकन किया । तत्पश्चात प्रशिक्षणार्थियों ने शुष्क वन अनुसंधान संस्थान, जोधपुर के प्रायोगिक क्षेत्र, गंगाणी का भ्रमण किया जहाँ नमक प्रभावित क्षेत्रों के पुनर्वासन हेतु किये गये विभिन्न प्रयोगात्मक पौधारोपण इत्यादि तकनीकी कार्यों की जानकारी श्री रतनाराम लोहरा , अनुसंधान सहायक प्रथम ने दी।

प्रशिक्षण कार्यक्रम के तीसरे दिन श्री एस. आर. बालोच , वैज्ञानिक -सी ने "सतत आजीविका के संदर्भ में वन पारिस्थितिकी एवं जैव विविधता का महत्व" विषय पर अपने संभाषण में जैव विविधता एवं पारिस्थितिकी की सतत आजीविका में इसकी भूमिका के बारे में जानकारी दी। डॉ. रंजना आर्या ने "चारागाह विकास एवं अवक्रमित भूमि की उत्पादकता वृद्धि" विषय पर अपने संभाषण में अवक्रमित भूमि में पौधारोपण तकनीक से उत्पादकता वृद्धि एवं चारागाह विकास पर जानकारी प्रशिक्षणार्थियों को दी। श्री एन. बाला , वैज्ञानिक -एफ़ ने "जलवायु परिवर्तन के संदर्भ में सतत आजीविका" विषय पर अपने संभाषण में जलवायु परिवर्तन एवं उसके संदर्भ में सतत आजीविका के संबंध में जानकारी दी। डॉ. बिलास सिंह, वैज्ञानिक -बी ने "सतत आजीविका में कृषि वानिकी की भूमिका" विषय पर संभाषण देते हुए कृषि के साथ-साथ पेड़ पनपाने और सतत आजीविका के संदर्भ में कृषि वानिकी पर प्रकाश डाला। डॉ. नवीन बोहरा , वैज्ञानिक -बी ने "औषधीय पौधों की जीविकोपार्जन में भूमिका" विषय पर अपने संभाषण में विभिन्न प्रकार के औषधीय पौधों के बारे में जानकारी देते हुए जीविकोपार्जन में उनकी भूमिका पर जानकारी दी।

इसके बाद विचारविमर्श एवं प्रशिक्षणार्थियों से फीडबेक लिया गया।

समापन सत्र में मुख्य अतिथि श्री पूनाराम चौधरी , जिला प्रमुख , जोधपुर ने कहा कि विकसित तकनीकी को प्रशिक्षण में सीखकर किसानों एवं आमजन को अपने खेतों में उपयोग करना चाहिए

जिससे उनकी आजीविका में वृद्धि हो , उन्होने कहा कि घटते भू-जल के मद्देनजर वृक्षों को लगाकर वातावरण को अच्छा बनाया जाना चाहिए।

संस्थान निदेशक, डॉ. आई.डी. आर्य ने वृक्षारोपण , वातावरण को स्वस्थ रखने , कृषि वानिकी की तकनीकों, उन्नत प्रजाति के पौधों का उत्पादन , कम मृदा जल में पौधारोपण तकनीक इत्यादि को बढ़ावा देने का सभी से आहवान किया।

जिला परिषद, जोधपुर के मुख्य कार्यकारी अधिकारी श्री प्रदीप के.गावंडे (भा.प्र.से.)ने विचारों के आदान-प्रदान की आवश्यकता प्रतिपादित करते हुए जल संरक्षण हेतु अधिक कार्य की आवश्यकता पर ज्यादा बल दिया।

श्रीमती भावना शर्मा, वैज्ञानिक-डी कोर्स डायरेक्टर ने सभी का धन्यवाद किया । सभी प्रशिक्षणार्थियों को प्रमाण पत्र वितरित किए गए ।

प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन/व्यवस्था कोर्स डायरेक्टर श्रीमती भावना शर्मा वैज्ञानिक -डी, श्री रतना राम लोहरा, अनुसंधान सहायक प्रथम, महिपाल विश्नोई, अनुसंधान सहायक -द्वितीय, डॉ. हेमलता, सहायक, श्रीमती मीता सिंह तोमर, तकनीकी सहायक, श्री तेजाराम, द्वारा की गयी।